ओशो सुगंध

जनवरी 2022

नया साल, नया प्रयास

नया जोश, नया होश

नई उमंग, नई तरंग

नए आप, ध्यान के साथ

ओशो सुगंध संघ

परमगुरु ओशो के चरणों में समर्पित

प्रेरणास्त्रोत
स्वामी शैलेंद्र सरस्वती एवं माँ अमृत प्रिया

संपादक
स्वामी कृष्ण कबीर
माँ मोक्ष संगीता

संकलनकर्ता एवं प्रूफ़ रीडिंग
माँ मोक्ष संगीता

अन्य सहयोग
मस्तो बाबा

कला एवं साज-सज्जा
स्वामी कृष्ण कबीर
स्वामी प्रेम प्रवीण

॥ अंक - 1 ॥ जनवरी 2022 ॥

"नूतन, पुरातन और सनातन"

आज जो भी वस्तु नूतन है, समय बीतने पर वह पुरातन हो जाएगी। आज जिसे हम पुरातन कहते हैं वह भी कभी नूतन थी। नूतन और पुरातन दोनों से परे तीसरा तत्व है सनातन, जो कि शाश्वत सत्य है।

जीवन की परिधि पर समय का खेल चलता रहता है। जो भी नया लगता है शीघ्र ही वह पुराना हो जाता है। जिससे उमंग और उत्तेजना जन्मती है, जल्द ही उसी से उदासी और ऊब उत्पन्न हो जाती है। किंतु यह कालचक्र जिस धुरी पर घूम रहा है वह ना कभी नया होता और ना पुराना होता। जीवन का केंद्र सनातन है। दूसरे शब्दों में ऐसा भी कह सकते हैं कि वह सदैव "क्षण क्षण नित नूतन" है।

नये पुराने के परिवर्तनशील बचकाने खेल से गुजर कर परिपक्वता आती है, और केंद्र की खोज आरंभ हो जाती है। अपरिवर्तनशील सत्य की तलाश ही अध्यात्म है। यह अनुसंधान ही मनुष्य की प्रौढ़ता का लक्षण है। स्मरण रहे कि निरंतर बदल रहे दृश्यों का दृष्टा स्वयं कभी नहीं बदलता। सदगुरु ओशो हमें संकेत करते हैं~ उस साक्षी चैतन्य की ओर, बाहर से भीतर की ओर, परिधि से केंद्र की ओर, मृत्यु से अमृत तत्त्व की ओर। "ओशो सुगंध" ई-पत्रिका का यह प्रथम पुष्प उसी अंतर्यात्रा के पथ पर अर्पित है।

जय ओशो

स्वामी कृष्ण कबीर

संपादक - ओशो सुगंध

ओशो सुगंध ई-पत्रिका की विशेषताएँ

यह एक जीवित पत्रिका है

नीचे दर्शाए गए चिन्ह इस पत्रिका में आपको विभिन्न जगह मिलेंगे, जिनके स्पर्श मात्र से वह सक्रिय हो जाएँगे

इस बटन को स्पर्श करते ही आप संगीत का ऑडीओ सुन अथवा डाउनलोड कर सकते हैं

इस बटन को स्पर्श करते ही आप वह विडीओ देख सकते हैं

इस बटन को स्पर्श करते ही आपके फ़ोन पर उस जगह का गूगल मैप खुल जाएगा

इस बटन को स्पर्श करते ही आप WhatsApp पर सम्बंधित व्यक्ति को संदेश भेज सकते हैं

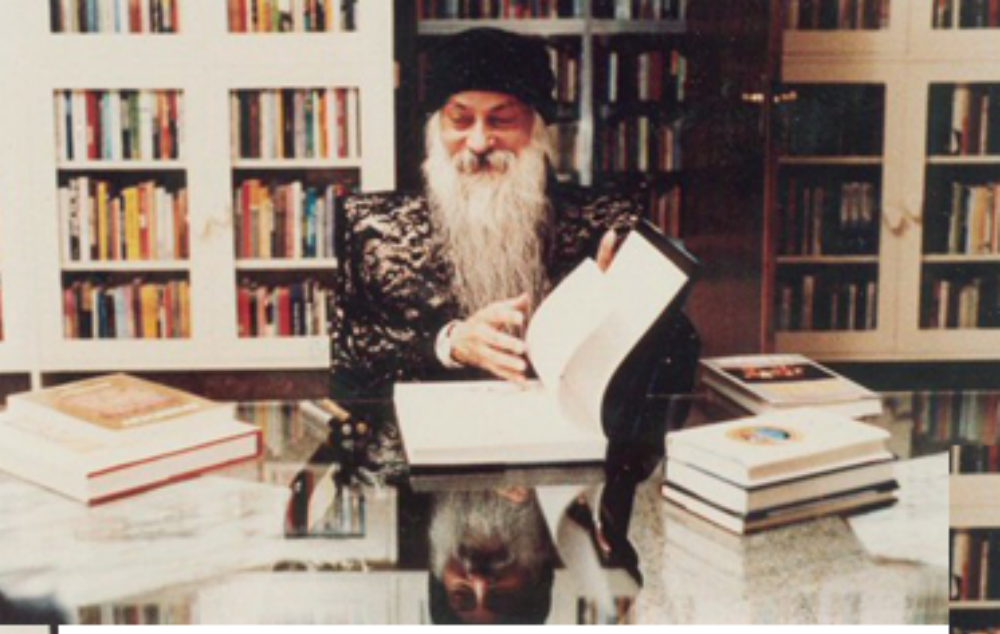

अनुक्रम

किसी भी विषय को स्पर्श करके आप सीधे उस विषय पर पहुँच सकते हैं

1. प्रेम पत्र ...6
2. जीवन को नवीनता से भरने के सूत्र ...7
3. कुछ प्रयोग करने जैसे ...13
4. ध्यान की सुगंध ...14
5. भागवत-गीत ...15
6. आगामी ध्यान शिविर ...16
7. Online ध्यान कार्यक्रम ...17
8. योग निद्रा ध्यान ...18
9. गम्भीरता एक रोग है ...19
10. नया क्या होगा नए साल में ? ...20
11. स्वामी शैलेंद्र द्वारा प्रवचन - डाउनलोड ...24
12. ओशो फ्रेगरेंस ...25
13. ओशो द्वारा प्रवचन - डाउनलोड ...26

प्रेम पत्र

ओशो का एक हस्तलिखित पत्र

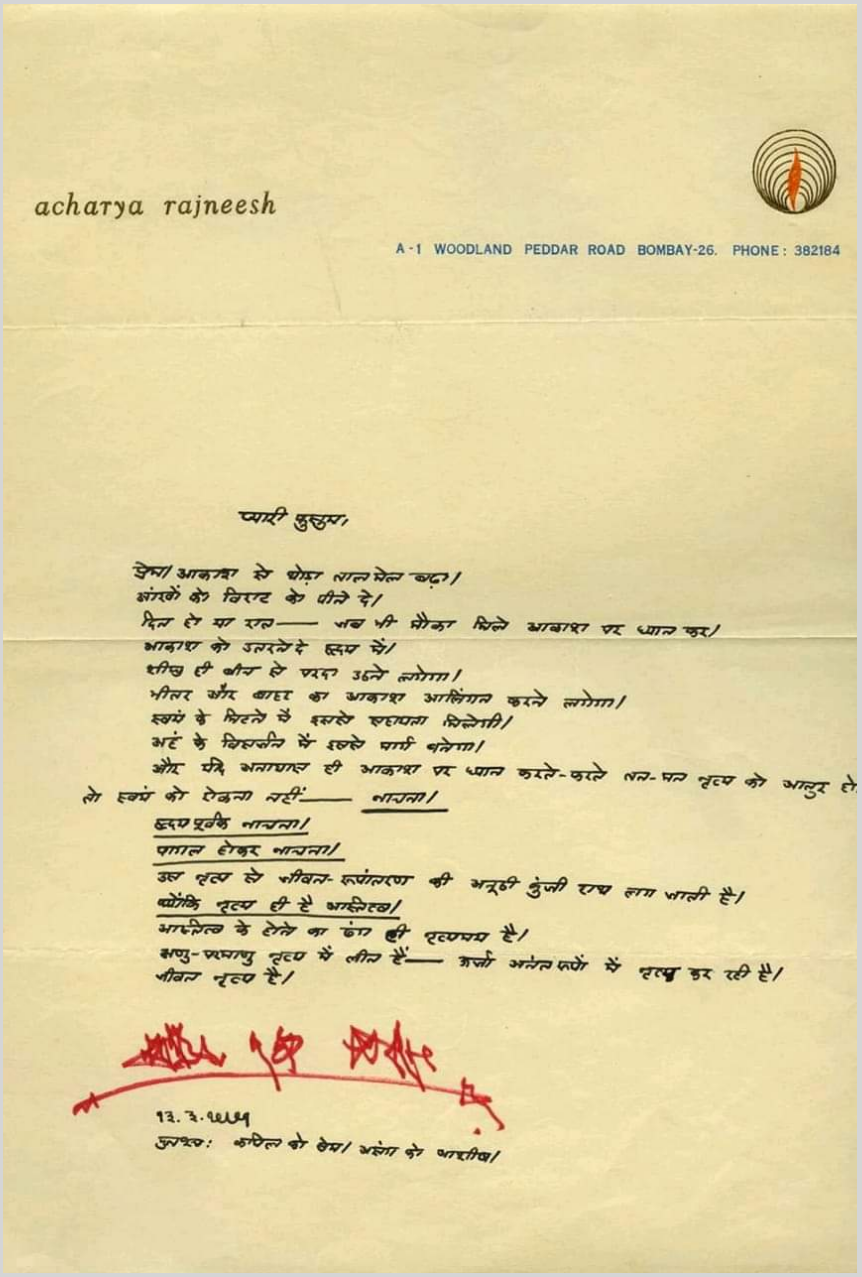

acharya rajneesh

A-1 WOODLAND PEDDAR ROAD BOMBAY-26. PHONE : 382184

प्यारी कुसुम,

प्रेम। आकाश से थोड़ा तालमेल बढ़ा।
आंखों को विराट को पीने दे।
दिन हो या रात — जब भी मौका मिले आकाश पर ध्यान कर।
आकाश को उतरने दे हृदय में।
शीघ्र ही भीतर से परदा उठने लगेगा।
भीतर और बाहर का आकाश आलिंगन करने लगेगा।
स्वयं के मिटने में इससे सहायता मिलेगी।
अहं के विसर्जन में इससे मार्ग बनेगा।
और यदि अनायास ही आकाश पर ध्यान करते-करते तन-मन नृत्य को आतुर हो
तो स्वयं को रोकना नहीं — नाचना।
हृदयपूर्वक नाचना।
पागल होकर नाचना।
उस नृत्य से जीवन-रूपांतरण की अनूठी कुंजी हाथ लग जाती है।
क्योंकि नृत्य ही है अस्तित्व।
अस्तित्व के होने का ढंग ही नृत्यमय है।
अणु-परमाणु नृत्य में लीन हैं — ऊर्जा अनंत रूपों में नृत्य कर रही है।
जीवन नृत्य है।

१३.३.१९७१

पुनश्च: कपिल को प्रेम। मंगा को आशीष।

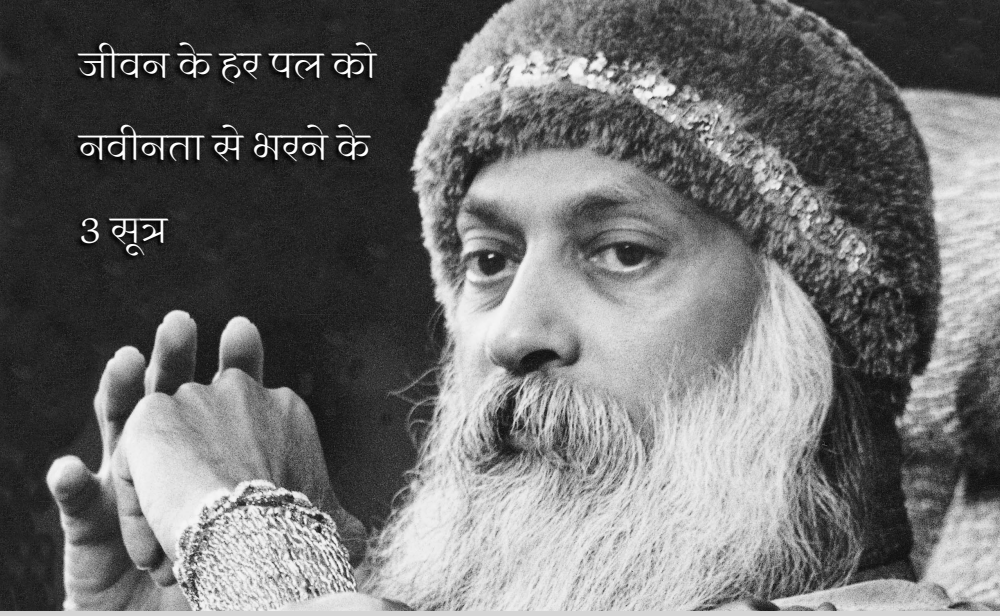

मुझसे कहते हैं मित्र कि नये वर्ष के लिए कुछ कहूं।

नये वर्ष के लिए मैं कुछ न कहूंगा। क्योंकि आप ही तो नया वर्ष फिर जीएंगे, जिन्होंने पिछला वर्ष पुराना कर दिया; आप नये वर्ष को भी पुराना करके ही रहेंगे। आपने न मालूम कितने वर्ष पुराने कर दिए! आप पुराना करने में इतने कुशल हैं कि नया वर्ष बच पाएगा, इसकी उम्मीद बहुत कम है। आप इसको भी पुराना कर ही देंगे। और एक वर्ष बाद फिर इकट्ठे होंगे और फिर सोचेंगे, नया वर्ष। ऐसा आप कितनी बार नहीं सोच चुके हैं! लेकिन नया आया नहीं! क्योंकि आपका ढंग पुराना पैदा करने का है।

नये वर्ष की फिकर न करें। नये का कैसे जन्म हो सकता है, इस दिशा में थोड़ी सी बातें सोचें और थोड़े प्रयोग करें। तो तीन बातें मैंने आपसे कहीं। एक तो पुराने को मत खोजें। खोजेंगे तो वह मिल जाएगा, क्योंकि वह है। हर अंगारे में दोनों बातें हैं। वह भी है जो राख हो गया अंगारा, बुझ गया जो; जो अंगारा बुझ चुका है, जो हिस्सा राख हो गया, वह भी है। और वह अंगारा भी अभी भीतर है जो जल रहा है, जिंदा है; अभी है, अभी बुझ नहीं गया। अगर राख खोजेंगे, राख मिल जाएगी। जिंदगी बड़ी अदभुत है, उसमें सब खोजने वालों को सब मिल जाता है। वह आदमी जो खोजने जाता है वह मिल ही जाता है।

और जो आपको मिल जाता हो, ध्यान से समझ लेना कि आपने खोजा था इसीलिए मिल गया है। और कोई कारण नहीं है उसके मिल जाने का। नया अंगारा भी है, वह भी खोजा जा सकता है। तो पहली बात, पुराने को मत खोजना। कल सुबह से उठ कर थोड़ा एक प्रयोग करके देखें कि पुराने को हम न खोजें। कल जरा चौंक कर अपनी पत्नी को देखें जिसे तीस वर्ष से आप देख रहे हैं। शायद आपने तीस वर्ष देखा ही नहीं फिर। हो सकता है पहले दिन जब आप लाए थे तो देख लिया होगा, फिर बात समाप्त हो गई। फिर आपने देखा नहीं। और अगर अभी मैं आपसे कहूं कि आंख बंद करके जरा पांच मिनट अपनी पत्नी का चित्र बनाइए मन में, तो आप अचानक पाएंगे कि चित्र डांवाडोल हो जाता है, बनता नहीं। क्योंकि कभी उसकी रेखा भी तो अंकित नहीं हो पाई। हालांकि हम चिल्लाते रहते हैं कि इतना प्रेम करते हैं, इतना प्रेम करते हैं। वह सब चिल्लाना भी इसीलिए है कि प्रेम नहीं करते, शोरगुल मचा कर आभास पैदा करते रहते हैं। वह आभास हम पैदा करते रहे हैं।

तो कल सुबह उठ कर नये की थोड़ी खोज करिए। नया सब तरफ है, रोज है, प्रतिदिन है। और नये का सम्मान करिए, पुराने की अपेक्षा मत करिए। हम अपेक्षा करते हैं पुराने की। हम चाहते हैं कि जो कल हुआ वह आज भी हो। तो फिर आज पुराना हो जाएगा। जो कभी नहीं हुआ वह आज हो, इसके लिए हमारा खुला मन होना चाहिए कि जो कभी नहीं हुआ वह आज हो। हो सकता है वह दुख में ले जाए। लेकिन मैं आपसे कहता हूं, पुराने सुखों से नये दुख भी बेहतर होते हैं, क्योंकि नये होते हैं। उनमें भी एक जिंदगी और एक रस होता है। पुराना सुख भी बोथला हो जाता है, उसमें भी कोई रस नहीं रह जाता। इसलिए कई बार ऐसा होता है कि पुराने सुखों से घिरा आदमी नये दुख अपने हाथ से ईजाद करता है, खोजता है। वह खोज सिर्फ इसलिए है कि अब नया सुख नहीं मिलता तो नया दुख ही मिल जाए।

आदमी शराब पी रहा है, वेश्या के घर जा रहा है। यह नये दुख खोज रहा है। नया सुख तो मिलता नहीं, तो नया दुख ही सही। कुछ तो नया हो जाए। नये की उतनी तीव्र प्राणों की आकांक्षा है। लेकिन हम पुराने की अपेक्षा वाले लोग हैं।

इसलिए दूसरा सूत्र आपसे कहता हूंः पुराने की अपेक्षा न करें। और कल सुबह अगर पत्नी उठ कर छोड़ कर घर जाने लगे, तो एक बार भी यह मत कहें कि अरे तूने तो वायदा किया था। कौन किसके लिए वायदा कर सकता है? तब उसे चुपचाप घर से विदा कर आएं। जिस प्रेम से उसे ले आए थे, उसी प्रेम से विदा कर आएं। यह विदा भी स्वीकार कर लें, नये की सदा संभावना है। पत्नी चौबीस घंटे पूरी जिंदगी साथ रहेगी, यह जरूरी क्या है? रास्ते मिलते हैं और अलग हो जाते हैं। मिलते वक्त और अलग होते वक्त इतना परेशान होने की क्या बात है?

लेकिन नहीं, बड़ा मुश्किल है विदा होना। क्योंकि हम कहेंगे कि जो पुराना था उसे थिर रखना है। सब पुराने को थिर रखना है।

नया जब आए तब उसे स्वीकार करें, पुराने की आकांक्षा न करें।

और तीसरी बातः कोई और आपके लिए नया नहीं कर सकेगा; आपको ही करना पड़ेगा। और ऐसा नहीं है कि आप पूरे दिन को नया कर लेंगे या पूरे वर्ष को नया कर लेंगे, ऐसा नहीं है। एक-एक कण, एक-एक क्षण को नया करेंगे तो अंततः पूरा दिन, पूरा वर्ष भी नया हो जाएगा। एक-एक क्षण हमारे हाथ से निकला जा रहा है--जैसे रेत का दाना गिरता है रेत की घड़ी से, ऐसा एक-एक क्षण हमारे हाथ से गुजरा जाता है। एक क्षण को नया करने की फिकर करें, अगले क्षण की फिकर मत करें। अगला क्षण जब आएगा तब उसे नया कर लेंगे।

और नये के इस मंदिर में थोड़ा प्रवेश, उस परमात्मा के निकट पहुंचा देता है जो जीवन का मूल स्रोत है, मूल धारा है। और वहां जो एक बार नहा लेता है, उस मूल स्रोत में, उसके लिए इस जगत में फिर पुराना रह ही नहीं जाता। फिर कुछ भी पुराना नहीं है। फिर पुराना है ही नहीं। फिर उसके लिए मृत्यु जैसी चीज ही नहीं है, कुछ मरता ही नहीं। फिर उसके लिए बूढ़े जैसा कोई मामला ही नहीं, कुछ वृद्ध ही नहीं होता। तब उसे वृद्धावस्था भी एक नई अवस्था है जो जवानी के बाद आती है। तब उसके लिए मृत्यु भी एक नया जन्म है जो जन्म के बाद होता है। तब उसके लिए सब नये के द्वार खुलते चले जाते हैं। अंतहीन नये के द्वार हैं।

लेकिन हमने सब पुराना कर डाला है, उसमें नये के झूठे स्तंभ खड़े रखे हैं, लीप-पोत कर खड़े कर रखे हैं--कि ये नये दिन, यह नया वर्ष। यह सब बिल्कुल धोखा है जो हम खड़ा किए हैं। लेकिन सुखद है, क्योंकि इतने पुराने को झेलने में सहयोगी हो जाता है। और ऐसा लगता है कि चलो अब कुछ नया आया, अब कुछ नया होगा। वह कभी नहीं होता।

अब कितने सब मित्र नये वर्ष पर एक-दूसरे को शुभकामनाएं देंगे। इन मित्रों को पिछले वर्ष भी उन्होंने दी थीं। और फिर हम शुभकामनाओं को बड़े सरल मन से ग्रहण करेंगे और सरल मन से उनका प्रदान भी करेंगे। और जानते हुए कि यह सब व्यर्थ है, इसका कोई मतलब नहीं है।

तो मैं तो कोई शुभकामना नहीं करूंगा नये वर्ष के लिए आपको। क्योंकि मैं एक ही बात कह सकता हूं कि आपको याद दिलाऊं कि आपने इतने वर्ष पुराने कर डाले, तो नये वर्ष पर आप ख्याल रखना कि अब फिर वही न करना आप जो अब तक किया है। इसको फिर वापस पुराना मत कर डालना, इसे नये करने की कोशिश करना। यह नया हो सकता है। और अगर यह नया हो गया तो प्रतिदिन नया हो जाता है, प्रतिदिन नये वर्ष का आरंभ है। पुराना टिकता ही नहीं, बचता ही नहीं, सब बह जाता है।

लेकिन हम ऐसा पकड़ते हैं पुराने को कि नये को होने के लिए अवकाश नहीं, स्पेस नहीं रह जाता। अगर हम अपने मन की खोजबीन करें, तो सब तरफ हम पुराने को इतने जोर से पकड़े हुए हैं कि नये के लिए जगह कहां है? नया आए कहां से आपके घर में? आपके चित्त में नये की किरण प्रवेश कहां से करे? आप तो पुराने को इतने जोर से पकड़े हुए हैं। उसे छोड़ते ही नहीं, रत्ती भर जगह नहीं छोड़ते उसमें। उधर स्पेस की जरूरत है, वहां जगह की जरूरत है, वहां से नया आ सकता है।

मेरी बातों को इतने प्रेम से सुना, उससे बहुत अनुगृहीत हूं। और आपके भीतर नया पैदा हो सके, ऐसी परमात्मा से प्रार्थना करता हूं।

• जीवन रहस्य - 8

उपरोक्त प्रवचन पूरा सुनने के लिए इस पर क्लिक करें

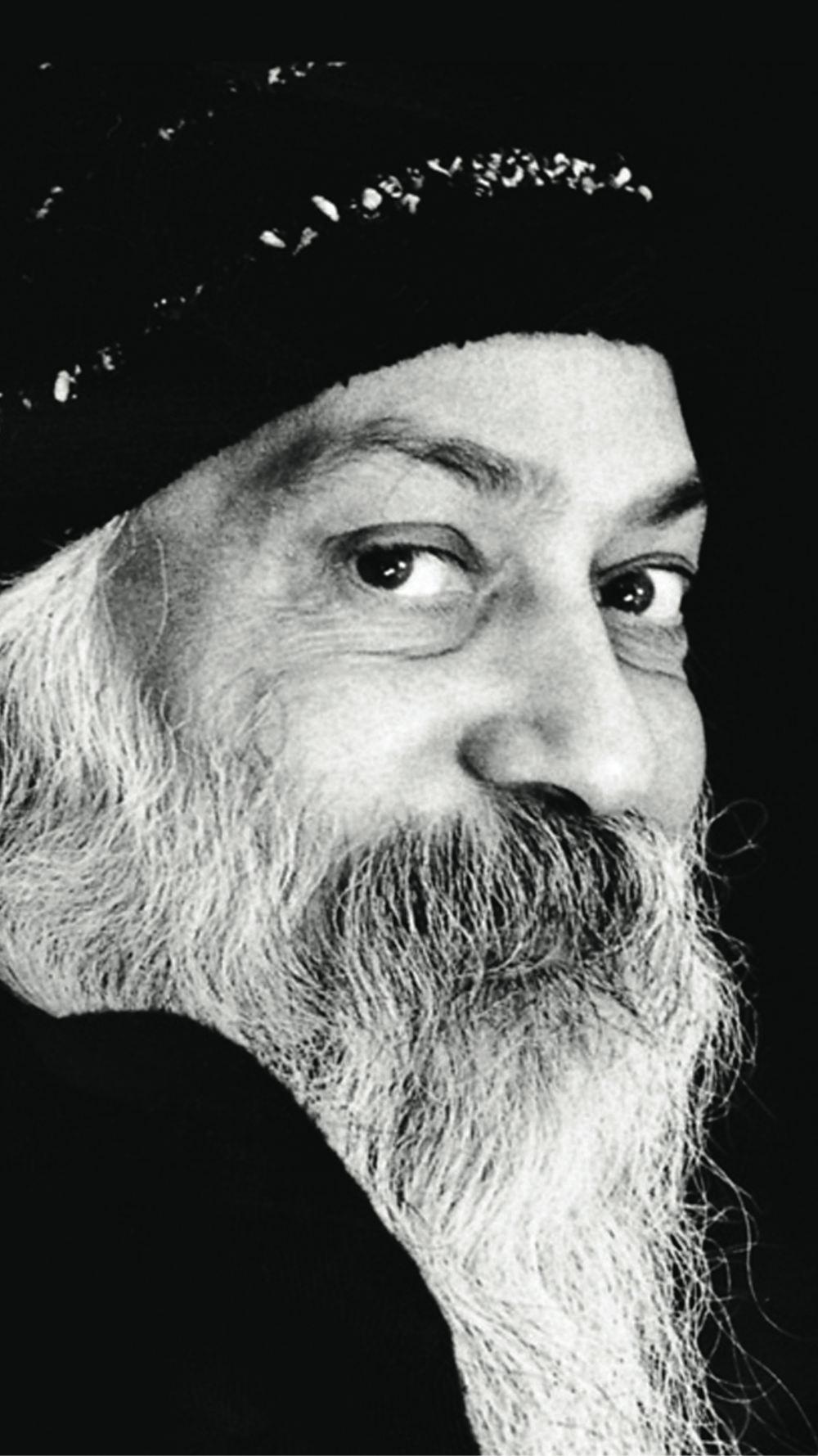

कुछ प्रयोग करने जैसे

इस व्यक्ति को शांति मिले

जब भी कोई व्यक्ति आपसे मिलने आए, तो आप अपने भीतर स्थिर हो जाएं, शांत हो जाएं।

जब वह व्यक्ति भीतर प्रवेश करे तो अंतरतम में उसके लिए शांति का भाव करें : " इस व्यक्ति को शांति मिले " सिर्फ कहें ही नहीं बल्कि इस भाव से भर जाएं, इसे प्राणों में महसूस करें।

अचानक आप उस व्यक्ति में एक बदलाव देखेंगे, जैसे की कुछ अज्ञात उसके भीतर प्रवेश कर गया हो।

वह बिलकुल अलग ही व्यक्ति होगा।

इसका प्रयोग करके देखें।

- ओशो

ध्यान की सुगंध

विभिन्न जगहों पर संचालित हमारे ध्यान शिविरों की कुछ झलकियाँ....

24 - 30 दिसम्बर 2021
मटरा, छत्तीसगढ़

25 - 27 दिसम्बर 2021
हयातपुर, पंजाब

27 दिसम्बर - 02 जनवरी 2022
ओशो मधुबन, चाम्पा

भगवत-गीत

माँ अमृत प्रिया द्वारा गाये गए कुछ अनमोल नए गीत

Universe is a Song

ओशो प्यारे हैं

हमारा इश्क़

ओशो अभी यहीं हैं

आगामी ध्यान शिविर

एक मौक़ा फिर से खुद में डूबने का

पंजाब

ओंकार साधना शिविर

09 - 14 जनवरी 2022

स्थान - स्टार विला रिज़ॉर्ट, गुरु हर सहाय, फ़िरोज़पुर (पंजाब)

सम्पर्क - 9814587745 / 9914148909

पंजाब

एक ओंकार सतनाम

15 - 22 जनवरी 2022

स्थान - रॉयल कॉन्चेंट स्कूल, मोगा (पंजाब)

सम्पर्क - 7986461138 / 9815599525

मध्य-प्रदेश

कोपलें फिर फूट आई

27 - 30 जनवरी 2022

स्थान - सम्पदा गार्डन एंड रिज़ॉर्ट, खातेगांव (मध्यप्रदेश)

सम्पर्क - 9827812392 / 7828578797

आमंत्रण

Online ध्यान कार्यक्रम

वर्ष नया, हर्ष नया, सत्संग का रंग नया

घर बैठे ऑनलाइन साधना का ढंग नया

Loving Awareness Retreat
02 - 08 जनवरी 2022

Who Am I? Retreat
16 - 22 जनवरी 2022

Self Realisation Meditation Retreat
30 जनवरी - 05 फ़रवरी 2022

Cosmic Realisation Meditation Retreat
13 - 19 फ़रवरी 2022

ओशो फ्रेगरेंस के कार्यक्रमों के लिए अब आप स्वयं भी ऑनलाइन बुकिंग कर सकते हैं अन्यथा नीचे दिए गए नंबर पर फोन करके भी अपना पंजीकरण करवा सकते हैं

अगर आप अपना पंजीकरण स्वयं करना चाहते हैं तो नीचे दिए गए ZOOM बटन पर क्लिक करें।

फ़ोन - 9464247452 / 9311806388

zoom

योग निद्रा ध्यान

आत्म-सम्मोहन एवं सचेतन, गहरी नींद के लिए माँ अमृत प्रिया जी की मधुर आवाज़ में

नीचे बटन पर क्लिक करे

गम्भीरता एक रोग है

“ ग्राहक: घड़ी दिखाइए।
दुकानदार: बीवी के लिए चाहिए या ब्रांडेड दिखाऊँ?

“ एक समाज सुधारक संत ने एक आदमी को थप्पड़ मार दिया।
आदमी ने पूछा: महाराज, मैंने क्या गलती की?
संत ने समझाया: वत्स, तुम गलती करो, उसके लिए हम इंतज़ार थोड़ी करेंगे! गलती करने के बाद दंड देने से क्या फायदा? हम तो एडवांस पनिशमेंट देकर पाप की संभावना रोकने का प्रयास कर रहे हैं।

“ भक्त : पंडित जी, पुरुषों के ख़ुशी जीवन की कुंजी पर प्रकाश डालें।

पंडित जी : वत्स, उपाय बहुत सरल हैं। एक ऐसी स्त्री ढूंढिए जो आपको अच्छा भोजन बनाकर खिलाए, एक ऐसी स्त्री जो आपकी बातों को महत्व दें, एक ऐसी स्त्री जो हर पल आपके साथ रहे, एक ऐसी स्त्री जो हर पल आप को ख़ुश रखें, केवल एक बात का ध्यान रखें कि - इन चारों स्त्रियों को एक दूसरे के बारे में भनक नहीं लगनी चाहिए ।

नया क्या होगा नए साल में?

‘नया वर्ष मुबारक हो’ जब चंदूलाल बोला;
तो मुल्ला नसरुद्दीन ने गुस्से से मुंह खोला-
‘मुबारक की वजह बताओ, मुझे नए का अर्थ समझाओ।
जो देखो वही शुभकामनाएं दिये जाता है,
किंतु नए वर्ष में नया क्या होगा-
इस प्रश्न का उत्तर मुझको कोई भी नहीं बताता है।
मैं पूछता हूं कि साल में वही बारह महीने होंगे न?
राजनीति में वही छंटे हुए नगीने होंगे न?
साल में तीन सौ पैंसठ दिन होंगे, और सप्ताह में सात।
तो समझाओ मुझे चंदूलाल कि नई क्या होगी बात?
दिन में चैबीस घंटे होंगे, जैन तीर्थंकरों जैसे,
घंटे साठ मिनिट के होंगे, सख्त परंपराओं से।
ट्रेनें पटरी पर दौड़ेगी, कारें सड़कों पर,
लड़कियां दोष लगाएंगी फिर लड़कों पर।
नाव नदी में ही चलेगी न?
एरोप्लेन हवा में उड़ेगी न?
क्या कुत्ते भौंकना बंद करेंगे या नेता भाषण देना?
सेठ मुनाफा छोड़ेंगे या अधिकारी रिश्वत लेना?
कवि करेंगे कविता, लेखक कथा लिखेंगे,
टी.वी. पर न्यूजरीडर प्रतिदिन व्यथा पढेंगे-
कि रेल दुर्घटना में कितने मरे, समुद्र में कितने डूबे,
आतंकवादियों के कहां तक पूरे हुए मंसूबे!
कौन घोटाला किया, कौन कमीशन खाया,
कौन समर्थन वापस ले फिर सरकार गिराया?
बाढ़, अकाल, भूकम्प, बीमारी, भुखमरी फैलेगी।
फिर भी हम बेशर्मों की जनसंख्या जरूर बढ़ेगी।

क्या इसके अतिरिक्त और कुछ होगा अगले वर्ष,
फिर किस बात की मुबारक, किस चीज का है हर्ष?
सुनो मेरे यार, नहीं होने वाला कोई भी सुधार।
गिरती हुई नैतिकता का रोना उपदेशक रोएंगे,
कट्टरपंथी धर्मगुरु झगड़े के बीज बोएंगे;
हमेशा की तरह ऊबे हुए श्रोतागण सोएंगे।
वक्ता बकेंगे, लेखक लिखेंगे, आलोचक हंसेंगे।
सदा से सहने वाले लोग, आगे भी सहेंगे।
रोज फंसेंगे बेचारे कीट-पतंगे, चालाक मकड़ी के जाल में
तो बताओ चंदूलाल, नया क्या होगा नए साल में?
पाकिस्तानी नेता फिर धमकी देंगे,
हिन्दुस्तानी नेता कड़ी चेतावनी देंगे।
दोस्ती के झूठे हाथ बढ़ाए जाएंगे,
पर किसी समझौते पर न पहुंच पाएंगे।
बस यूं ही कोरी चर्चाएं चलेंगी।
जनता का पैसा खर्चा करेंगी।
वही पुरानी बातचीत दोहराएंगे, काश्मीर के मुद्दे पर अटक जाएंगे।
नये साल में कौन सा नया गुल खिलाएंगे?
क्या अब दिन में तारे निकलेंगे या पतझड़ में फूल खिलेंगे?
क्या चंदा-सूरज पश्चिम से उगेंगे या पूरब में डूबेंगे?
अरे मछलियां आकाश में रहेंगी, अथवा पशु-पक्षी पानी में?
मंत्री-सांसद गांव में बसेंगे, और आदिवासी राजधानी में?
कुछ नया न होगा मुंबई की फिल्म कहानी में।
झगड़े चलते ही रहेंगे, बहु और सास में,
सबआर्डिनेट और बास में, हर वर्ग में, हर क्लास में।
मई में गर्मी पड़ेगी, दिसंबर होगा ठंडा,
फिर पाखंडी साबित होगा कोई साधु, त्यागी, पंडा।
सदा की भांति महंगाई बढ़ती चली जाएगी-
यहां तक कि आम जनता आम भी न खा पाएगी।
नए वर्ष में भी अगर यही सब होना है
तो किस बात की मुबारक किसलिए खुश होना है?
गत वर्ष का रोना, इस वर्ष भी रोना है।
वर्षा हो कि सूखा, हमें नहीं चैन से सोना है।

वर्षा हुई तो बाढ़ से मरेंगे, सूखे में अकाल से
वही कथा व्यथा की, क्या फर्क पड़ेगा साल से!
भाईजान, कुत्ते की पूंछ कभी सीधी नहीं होगी,
अपने मियां से खुश कोई बीबी नहीं होगी।
पति-पत्नी के बीच चलेगी खींचा-तानी, बाप-बेटे बोलेंगे तीखी-कड़वी वाणी।
भाई-भाई लड़ेंगें, महाभारत वही पुरानी,
रामायण में रहेगी राम-सीता-रावण की त्रिकोण वाली कहानी।
पात्रों के नाम बदल जाते हैं, नाटक वही रहता है,
इसीलिए यह मुबारकवाद इतना मुझे खटकता है।
संसार एक चक्र है, व्हील है, यहां सब कुछ परिवर्तनशील है।
जिसे हम पुराना कहते हैं, वह 'भूतपूर्व नया' है;
जो कल अभूतपूर्व व नया था, वह आज पुराना हो गया है।
जो आज नवीन है, शीघ्र वह प्राचीन हो जाएगा,
आते-जाते फैशन सरीखा रोज बदलता जाएगा
घूम-फिरकर फिर वही लौट आएगा।
कभी लंबे बाल, कभी छोटे बाल, कभी सिरघुटे
दस-पांच प्रकार ही तो हो सकते हैं घिसे-पिटे।
अतः नए वर्ष का इतना हंगामा मचाना
मुझे तो लगता है बेहूदा और बचकाना।'
'माफ करो नसरुद्दीन'-बोला चंदूलाल-
सचमुच बीत चुका है पिछला साल।
आगामी साल सद्गुरु ओशो के नाम है,
देखना, "ओशो फ्रेगरेंस" का फैलता कितना काम है।
अब सैकड़ों बुद्ध होंगे, गूंजेगा अनहद नाद।
खत्म सारे युद्ध होंगे, मिटेगा आतंकवाद।
प्रेम, ध्यान और समाधि की हवा बहेगी।
हर गांव-नगर संबोधि की ज्योति जलेगी।
इतिहास दोहराता रहा आज तक खुद को, ऐसा न हो सकेगा अब आगे।
नहीं सुन पाए कबीर-महावीर-बुद्ध को, इसीलिए हम सोते रहे, न जागे।
किंतु महत प्रयास कर, बड़ी आशा में, ओशो ने कृपा कर, सरल भाषा में,
समझा दी धर्म की रहस्यमयी बात, खत्म हुई हमारी आध्यात्मिक रात।

अब भोर की बेला है, खुशियों का मेला है।
जब से क्षण-क्षण जीना सीखा, कण-कण नया-नवेला है।
आनंद में डूबा है तन-मन, बना है उत्सव मेरा जीवन।
बची न अपनी कोई वासना, केवल जगत के लिए प्रार्थना!
नए वर्ष के बहाने, इसीलिए यह मंगल भावना-
बस एक ही शुभकामना कि हो साकार ओशो का सपना,
धरती पर दस हजार चेतनाओं का जगना!
भीतर के ध्यान में न कुछ नया न पुरातन होता,
परमात्मा के ज्ञान में सब कुछ सनातन होता।
समाधि में, बुद्धत्व में शाश्वत सत्य मिलता है,
जो न घटता, न बढ़ता, न बनता, न मिटता है।
तुम ठीक कहते हो कि जगत है क्षणभंगुर, परिवर्तनशील;
लेकिन हमारी चेतना है इस चक्र की कील-
जिसके आधार पर घूमता नए-पुराने का व्हील।
इस दुनिया की बातें छोड़ो, अपनी आत्मा से नाता जोड़ो;
जो समयातीत है, कालातीत है, उसमें डूबना ही समाधि की रीत है।
जो सब कुछ जानता- उसे तुम जानो
अपने अंदर स्थित साक्षी को पहचानो।
वह न नया है न पुराना है, ओंकार तो प्रभु का तराना है।
वह सनातन संगीत ही असली भागवत गीता है
उसे जानकर व्यक्ति परमानंद में जीता है।
चलो तुम भी ओशो फ्रेगरेंस के कार्यक्रम में
कब तक जिओगे नए-पुराने के भ्रम में?'
हंसकर बोला मुल्ला-'अब हुआ बात का खुल्लम-खुल्ला।
तुम्हें भी मुबारक हो भाई चंदूलाल,
धार्मिकता की नई दृष्टि वाला नया साल।'
ऐसा कहकर वे मिले,
दोनों एक-दूसरे के गले।

- स्वामी शैलेंद्र सरस्वती

स्वामी शैलेंद्र सरस्वती द्वारा दिए गए विभिन्न प्रवचन
आप नीचे दिए गए बटन पर क्लिक करके सुन सकते हैं

मन के अनुसार काम नहीं होने पर दुख क्यों होता है?

अध्यात्म और मेडिकल साइंस का मिलन

साधना में प्रगति के लिए अहंकार को किस प्रकार छोड़ा जा सकता है?

इंटर्व्यू IBC24 के साथ

www.oshofragrance.org

OSHO
FRAGRANCE

'ओशो फ्रेगरेंस'- ओशो की श्रृंखला में मा अमृत प्रिया एवं स्वामी शैलेन्द्र सरस्वती (ओशो अनुज) द्वारा शुरू किया गया एक आध्यात्मिक अभियान है। यह हममें आमूलचूल परिवर्तन लाकर हमें आध्यात्मिक रुप से पुनर्जीवित करती है। यह हमारे अंदर प्रसुप्त चेतना बीज को पुष्पित व पल्लवित कर देती है और हमसे चैतन्य की सुगंध महकने लगती है।

ओशो कहते हैं- 'आधुनिक मनुष्य की मेरी एक अवधारणा है, जिसमें भौतिकता के प्रतीक यूनानी राजा झोरबा एवं आध्यात्मिकता के प्रतीक गौतम बुद्ध का समावेश होगा। वह दोनों भौतिक एवं आध्यात्मिक रुप से समृद्ध और संपन्न होगा। वह अपने शरीर और इंद्रियों के सभी रसों के प्रति संवेदनशील होगा और चेतना के शिखर पर विराजमान साक्षी भी होगा। वह एक साथ ईसामसीह एवं इपिकुरस होगा।'

'ओशो फ्रेगरेंस' बाह्य दार्शनिक सिद्धांत, नीति, नियम, वाद आदि के बजाय आंतरिक रुपांतरण के बेहतरीन अवसर प्रदान करती है। जिससे हम स्वयं कल से बेहतर हो सकें।

होश, चैतन्यता, आत्मस्मरण, प्रेम, कृतज्ञता, शांति, स्वतंत्रता, सहजता एवं आनंद जैसे दिव्य गुणों से संपन्न करने हेतु 'ओशो सुगंध' प्रतिबद्ध है। इसमें जीवन की गुणवत्ता को निखारने पर पूरा बल है। 'ध्यान और समर्पण' के माध्यम से अपने भीतर और गहरे जाना, अंदर जड़ें जमाना और फिर पूरे अस्तित्व से जुड़ जाना- इस तरह से 'ओशो फ्रेगरेंस' जिन्दगी को एक उत्सव बनाने की कला है।

सम्पर्क सूत्र - 9464247452 / 9890341020

ओशो द्वारा दिए गए विभिन्न अंग्रेज़ी व हिंदी प्रवचन आप नीचे दिए गए बटन पर क्लिक करके सुन अथवा डाउन्लोड कर सकते हैं

Essential points of Meditation

शिव नेत्र, तीसरी आंख, आज्ञा चक्र

Shiva & Shakti, Ardha-Narishwar

समाधि सुख